पल भर के प्यार ने बदला जीवन

● ब्रह्माकुमार सुनील कुमार गुप्ता, कानपुर (सिविल लाइन)

मैं इन्कम टैक्स विभाग में वरिष्ठ कर सहायक के पद पर कार्यरत हूँ, 35 वर्ष का हूँ। परिवार में मेरी पत्नी तथा दो छोटे बच्चे हैं। शादी के कुछ ही दिनों के बाद मेरे और मेरी पत्नी के बीच बहुत लड़ाई-झगड़े होने शुरू हो गये और जीवन बहुत ही असंतुलित हो गया। पत्नी को अकेलापन लगने लगा तो उसने टीवी में ब्रह्माकुमारी बहन शिवानी का कार्यक्रम देखना शुरू कर दिया। मुझे यह सब कुछ पसंद नहीं था और इस कारण भी मेरी उनसे खूब लड़ाई होती रहती थी (उस समय मुझे कलयुगी दुनिया का वातावरण बहुत अच्छा लगता था)। लड़ाई में उस समय तो जीत मेरी ही हुई, मेरा भय इतना होने लगा कि जैसे ही मैं शाम को कार्यालय से घर आता, मेरा बड़ा बेटा कहता, मम्मी, पापा आ गए हैं, जल्दी से टीवी बंद कर दो। जब मैं सो जाता तो मेरी पत्नी रात 11 बजे वह छुटा हुआ कार्यक्रम फिर देखा करती थी। ऐसा करते उसे करीब 2 वर्ष हो चुके थे। मैं अपनी कलियुगी आदतों में इतना डूबा हुआ था कि मैंने इन्टरनेट लगवा लिया और उसी में खोया रहने लगा। फिल्मी गाने सुनना, डाउनलोड करना, फालतू चीज़ों को देखना मेरा संस्कार बनता जा रहा था। मैं ऑफिस जाने के एक घंटे पहले सुबह 9 बजे सो कर उठता था, बच्चे कब स्कूल चले जाते थे, पता ही नहीं चलता था।

पहले दिन ही बाबा ने अशरीरी बना दिया

मेरे एक पड़ोसी सुबह 7 बजे टहलने जाते हैं, मैंने उनसे मज़ाक में कहा, मुझे भी साथ ले लिया करो। उन्होंने सच में अगले दिन सुबह 7 बजे मेरे दरवाजे की घंटी बजा दी। पत्नी ने मुझे उठाया और मैं मुँह बनाके पड़ोसी के साथ टहलने चला गया। टहलना मुझे अच्छा लगा और मैं नियमित टहलने लगा। टहल कर आता, तो पत्नी कंप्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से बहन शिवानी का राजयोग के कोर्स का कार्यक्रम देख रही होती थी। मैं बेड पर लेट जाता और कंप्यूटर की आवाज न चाहते हुए भी मेरे कानों में जाती रहती, सुबह-सुबह मन शांत रहता था इसलिए मैं उनसे कुछ नहीं कहता था। ऐसा चलते करीब एक सप्ताह बीता, मुझे राजयोग की बातें अच्छी लगने लगी और मैं रुचि लेने लगा। मैंने पत्नी से पूछा, योग कैसे लगाया जाता है? उसने बताया कि संस्कार चैनल में सुबह 4 बजे योग लगाने की विधि दिखाई जाती है। अगले दिन मेरी नींद सुबह 4:15 बजे अपने आप खुल गई। मैंने टीवी खोला

और बैठ गया। पहले ही दिन बाबा ने मुझे अशरीरी बना दिया और पूरा दिन मेरा बहुत अच्छा गया। मैं बहुत खुश था, फिर तो मैं रोज सुबह 4 बजे उठने लगा और योग करने के बाद सुबह 5 बजे टहलने जाने लगा ।

आँखें भर आई

इसके बाद पत्नी के साथ राजयोग सीखने के लिए सेवाकेन्द्र पर जाना शुरू कर दिया। एक दिन क्लास के बाद मेरी मुलाकात सेंटर की निमित्त बहन से हुई। मैंने कहा, दीदी, मुझे ब्रह्मा बाबा का एक फोटो चाहिए। मैं जिस तरह की फोटो की मांग कर रहा था शायद उस तरह की फोटो उस समय स्टाक में नहीं थी। उन्होंने बहनों से, क्लास रूम में लगी फ्रेमिंग की हुई फोटो उतार कर मुझे देने को कहा। मैंने मना कर दिया कि यह फोटो रहने दीजिएगा लेकिन दीदी ने ब्रह्मा बाबा की वह फोटो उतार कर (माला सहित) दे दी। मेरी आँखें उस पल भर

के नि:स्वार्थ प्यार से भर गई। मैंने उस फोटो को घर पहुँचकर तुरंत दीवार पर लगा दिया। मैंने सेंटर पर सिर्फ राजयोग सीखने के लिये जाना प्रारंभ किया था। सात दिन का कोर्स पूरा होने के बाद शायद मैं सेंटर जाना बंद कर देता लेकिन जब मैं उस फोटो के सामने बैठकर योग लगाता तो मुझे उस पल भर के प्यार की याद आ जाती, इस कारण मैंने पत्नी के साथ सेंटर जाना जारी रखा और मुरली सुनने लगा। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि इस सेंटर के माध्यम से मुझे भगवान मिल जायेंगे, मेरा तो जीवन ही अमूल्य बन गया।

बाबा है तो जीवन है

मुझे पढ़ाने वाला टीचर स्वयं भगवान है। विषय सिर्फ चार हैं – ज्ञान, योग, धारणा व सेवा। पढ़ाई का परिणाम अनुभव है और यह मेरा अनुभव है कि मेरे 84 जन्मों में मेरा यह राजयोगी जीवन सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि मुझे प्यार करने वाला, प्यारी-प्यारी बातें करने वाला, तबीयत ठीक ना होने के समय अपनी गोद में सुलाने वाला, दुख के समय रास्ता निकालकर सुख देने वाला, अपने हाथों से भोजन खिलाने वाला, प्यारा-प्यारा राजदुलारा, मेरी आँखों का नूर, मेरा बाबा, मेरा साजन, मेरा बच्चा, मेरा भैया, मेरा दोस्त प्यारा शिव बाबा मेरे साथ है। खुशी और प्यार होता क्या है, यह कई भाइयों व बहनों को पता नहीं है। मेरा आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अपने परमपिता परमात्मा को पहचानो, वो बांहें पसारे सभी को बुला रहे हैं कि बच्चे, अब दु:खी क्यों होते हो, 'मैं हूँ ना।' आप एक कदम सेंटर की तरफ बढ़ाओ, तो हो सकता है कि आपका जीवन श्रेष्ठ बन जाए। मेरा तो दृढ़ अनुभव है कि 'बाबा' है तो जीवन है, अगर 'बाबा' नहीं तो यह जीवन भी नहीं। मैं अपनी पत्नी से उस समय की गलती के लिये माफी माँगता हूँ। मुझे माफ कर देना संजू। ❖

बेहद की वैराग वृत्ति

ब्रह्माकुमार रामकुमार, रिवाड़ी

मृत्युकाल की सब सामग्री तैयार है। कफन भी तैयार है, नया नहीं बनाना पड़ेगा। उठाने वाले आदमी भी तैयार हैं, नये नहीं जन्मेंगे। जलाने की जगह भी तैयार है, नयी नहीं लेनी पड़ेगी। जलाने की लकड़ियाँ भी तैयार हैं, नये वृक्ष नहीं लगाने पड़ेंगे। केवल श्वास बंद होने की देर है। श्वास बंद होते ही यह सामग्री एकत्रित हो जायेगी। जैसे सामग्री तैयार है, क्या हमारी भी इतनी तैयारी है? यह संसार सदा रहने के लिए नहीं है। यहाँ केवल आकर जाने वाले ही रहते हैं। मकान यहाँ बना रहे हैं, सजावट यहाँ कर रहे हैं, संग्रह यहाँ कर रहे हैं, पर खुद अगली यात्रा की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ जाना है, वहाँ के लिए कुछ कमाया है क्या?

निश्चित समय पर चलने वाली गाड़ी के लिए भी पहले से सावधानी रहती है, फिर जिस मौत रूपी गाड़ी का कोई पता और समय निश्चित नहीं उसके लिये तो हरदम सावधानी रहनी चाहिये। दुनिया में और कुछ निश्चित हो या ना हो परन्तु आदमी एक दिन इस जहान से चला जाएगा, यह निश्चित है। आने वाला अवश्य जाने वाला होता है, यह नियम है। हर जन्मदिन हमें याद दिलाता है कि मृत्यु एक वर्ष और करीब आ गई है। कोई भी बड़ा होकर पढ़ेगा या नहीं, शादी करेगा या नहीं, धन कमाएगा या नहीं, इन सब बातों में सन्देह है, पर वह मरेगा कि नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

जब भी मन में खराब चिन्तन आए तो सावधान हो जायें कि यदि इस समय मृत्यु हो जाये तो क्या गति होगी? अगर हर समय शिवबाबा की स्मृति रहे तो मृत्यु कभी भी आ जाये, कोई चिन्ता नहीं। ❖